

આશા સહવાલે

1.248

ASHA ARCHIVES

सिद्ध

१

ॐ नमः श्रीवज्रवानाक्षे ॥ ॥ सिद्धा मथया विधि ॥ ॥ द्वायां सिद्धयूजा वि
धिः ॥ ध्यानवासनं मधुलवाच ॥ ध्यानकलशः सरगमनः यचक्रकुरुः थायिआ
दिनं स्थापनायाय धूतकाशीः धवाय गुणमधुलः यचक्रगवरेभाधनसिद्धि
थायः मूलमनुवायः विधिथं पूजायायः पारुः कुरु पूजाः सट्यागिनीपू
जाः वलि विधि ॥ मधुल स्थापनायाय ॥ मयनयेः सिद्धनयः देवयूजाः आ
गवायूजाः कायकलकायः धनजुदिकायः मधुलथिल ॥ वज्रवानाहीदि

मथ

१

लियायः धनउपाध्यानं किनदं जूयु माणिका पूजायाय ॥ किनदं सखा मयः लाव
ना ॥ गना मरुध निषय नजान सूर्यस्तु देवविश्ववज्रस्थितं कुरु कानं किनदं क
लकुरु विमने नि सध्व कवधु रुरुवज्रप्रको नय ऊलमनजाल विमान मरुध च
कलरः सहकाला विमवज्र मयी रमि विलाय ॥ न मरुध मणि विवज्र सुख नूपा
मय नाव साधु लोक विरुयाय निधमावज्र कुरु काना विमवज्र सुख्यस्तु रुरुव
कोलीना योलीरु च नदधय नाक्रान कुरु का वाजान लवमनि वि सच या कव

सिद्धा. लयनिवनिजितजगविघ्नवन्दानिनी. पीत. हनिन. मूलसव्यनवव्याफवकु.
 २ ज्यादष्टाकटललहिक्काप्रमिमूरवमभुतगकटिलनकवर्धुनरिनरुमधुडा
 ललाटस्यपंचकपालमालावलम्वितगलेदधुमिलः. सुधीनिरुमधममूधुम
 मेलव्यापुत्रमोम्वनभनानीलोनकवलायगाईकलकपिलकसुल्लक
 कादिनागनाजाकनमधुलावजघट्टम्वितकनास्यावेजमूधुदयंयट्टल
 मकनिष्ठादयम्वलितप्रभुगनऊनीदयमितिउलाकविजयमूडायास्वारे

मथ
 २

पुरुसमायनः सव्यकनास्यांमंकुअया. भावामास्यांकपालखडांगदधनीगर्जत
 हुंकानमूरवस्वरुतहुंकानात्यहृतनस्मिहिईअदिम्विघ्नानाकव्यहुंकानसुलि
 तदधकारुषूसमयंयत॥ ॥ आ. पा. ध. निलाऊन. लाहाग्रिनका. लाने. न
 कचन्दनं. यकनिनेखान. नकापालघो. दधिनय. पूष्य. नवयय. पूष्य
 न्यास. य. लो. धं. यु. नय्ये. ॥ आय. मरु. ॥ इ. ३ यधमो. वलि. अनाकन. ॥
 न्निकिनधपूजा॥ कलभ. सग. मरु. मामकीपूजा. दवपूजा. दकधविय

सिका.
३

कं. ऊरुमानपनि सिद्धं किक ॥ धन सहस्रं ऊनयाय. वलि क्काय ॥ धन का ऊरु
अनया हतय लचाय मूडा नय ॥ धन के खान रु रु लन संकावना ॥ म्या उ
या विता व ऊ वाना ही नूया पुष्य या नानू यद वी नूय चा पु नू यं उ श्री स म्ब न नू यं
विचि न्य. नस्मा रु सिं वा क व ऊं मयू धे ना शि नी ना रु न द व ना प्र व म्भ ॥ नि नो
ऊन ॥ मूडा स खो रु रु ग म्भ ना व ना ॥ सह डी ऊ मयू धे ना शि न रु न द व ना
प्र व म्भ य थ क मं च किक. कृ दु ल क ठि नू च क म र व ल अ ऊा णा मि ना रु व त्र

मथ
३

सम्व व व ना च ना भा घा ति द्वि नू या मा धि ति वि चिं प्र नु नु म हा रु न स त्व न थ
निल प्र व म्भ आ णा दि य नि न ना च का दि मू डा अ ऊा णा दि स्त ना वा व वं वि नू
धि मू च्य ॥ धू य. नि नो ऊ न. पू ऊा ॥ गिका या धि रु न ॥ अ आः रु ॥ पू ऊा. धू य. दी
प स व र द यं पुष्य न्या स ॥ य. ला. ध. म. न य्य द ॥ स्व स्व म नें द जा ये. व
लि वि य ॥ प नो य वा न पू ऊा ॥ खान रु नो ॥ धन गी क ॥ हा ड रु न द ॥ धु न्य ॥
मू डा रु म द ॥ गी क ॥ धन २ ॥ मा णा या चू सि क्क न य ॥ मूल या रु स्त ल य न

सिका. ४
ॐ श्रीवज्रहृन्नुक्कं हूं हूं रुद्रस्वाहा ॥ मूडाविरुषयत् ॥ व्याघ्रचर्म ॥ ॐ ३ सर्ववृद्ध
अकिनीयवज्रवर्णनीयवज्रवेगाचनीयहूं हूं रुद्रस्वाहा ॥ चक्रि ॥ ॐ धन २ धन
य २ मर्दय २ वज्रधुकं हूं हूं ॥ ॐ वज्रवेगाचनीयहूं हूं रुद्रस्वाहा ॥ गृद्धरुमना
वीनचक्रि मूकाल्पात्मक ॥ कथुल ॥ ॐ वज्रधर्मसमयत्वे हूं नू २ आलालिक हूं
रुद्रस्वाहा ॥ ॐ की हूं हूं हूं हूं ॥ ॐ गृद्धरुमनावीनकथुलामिगाल्पात्मक ॐ
वज्रवज्रसत्त्वमूडयं वीहं न ध्यात्मसंस्थितं ॥ कलि ॥ ॐ वज्रसत्त्वगमाविधमयः

मथ.
४

स्त्वं न त्वधृक् इह रुद्र ॥ ओं सर्ववृक्षपादि ॥ गुरुदरुमनावीनकलिकनलसम्भवा
त्मकं श्रीवज्रसत्त्वमुद्रयं वहिनेध्वात्मसंस्थितं ॥ नूचक इयं ॥ अस्वतपन
मध्वस्यग ॥ एहिहिजिनजिक इह रुद्र ॥ ओं हः नमो श्रीस्वाहा ॥ इह वायव्यह इह रुद्र
रुद्र २ इह ॥ ओं गुरुदरुमनावीननूचकं अस्वतपनसत्त्वमुद्रयं ॥ गुरुदरुमनावीन
जोः प्रह्लाधक इह ॥ ओं वं हायां जो मां इह २ रुद्र २ ॥ गुरुदरुमनावीनश्रीमाध्वसिध्वा
त्मकमेषलाश्रीवज्रसत्त्व ॥ ओं श्रीवज्रहं नूचक इह रुद्र ॥ नोयूनवम

सिद्धा

ॐ

सुखमुद्युमाला ॥ पुनपाठ ॥ ॐ कनक्षचरुस्वाहं ॥ निमरुं धा ॥ इववांगउमनूया
उ ॥ अतमाहगवनवीनवीनव्यनायप्यादि ॥ गृहदेरुमनावीनइववांगउमनू
पाठकंधीवर्जसुख ॥ ॥ थनउकमूइवकोइवागमाओयोमूलंवागमासालकधुप्रः
नाकानय ॥ थअं २कंयुष्यन्यासस्वानमालाऊनाथआभिलेसइववांगनथिस्यं
जाय ॥ धनकाअथअं २कंयुष्य ॥ इवालवलिदिय ॥ ॥ थनेमधुलप्रवमधु
थासं ३चाकउलवाकं ॥ ॐ प्रविमधुहगवनमहासुखमाकपुनंसर्वसिद्धिस्त

मथ

ॐ

रपदंयनमसुखारुमसिअर्थंऊहंवंहाः प्रसिद्धत्वं ॥ स्वाकस्वानमालाऊकंधानइवापा
इवन ॥ ॐ वजाघाटयसमयप्रवक्ष्यहं ॥ धमंउनायिउगासुवन ॥ इवनचाना
अस्वानमधुलसकाथरावनायायवाक् ॥ अथनमसुइवासयसुललितविला
सनमामिनमितनमामिऊहंवंहाः हिहिहिहिप्रतिकृकसुमंजलिनाथहाः ॥ नृ
समडाकास्यस्वानथमधुअमधुल ३चाकउलवाकं ॥ आका ॥ आत्यादचिहृत्वा
नादिनिधनेयनः महावर्जसमयसुखमूकाप्रवर्जप्रसिद्धमसुर्वारुमहासि

सिद्धा.
६

किमाहृष्योदिदवताः सर्ववर्जधनानां सा सिद्धिभयनमाकुरुः ॥ निर्दयिष्यन्
नन्नायि सर्वनागानुनागन ॥ तत्त्वमसिद्धमेतद्गवन्महानागमहानत ॥ अत्यंत
शुद्धधर्माग्र्यादिमूकगत्यगतः ॥ समस्तसर्वस्माद्विसेत्त्वप्रसिद्धम ॥ सर्वो
रुममहासिद्धिमाहृष्योद्यमूडया ॥ ५५ ॥ सिद्धिवर्जमेतद्गवन्महानागमहानत
लयनममे ॥ सर्वसर्वमनायायि सर्वसर्वहृदिस्थितः ॥ सर्वसर्वपिता चैव
कामाय समयायिता ॥ येन सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं सत्त्वं प्रकृतिपायात्ममेधुलं ॥ ननसं

मथ.
६

इतमनाथकामार्थयनियूक्त्यह ॥ मधुलसक्तस्कनकने ॥ प्रतिविम्बसमाधर्मा
स्वकाशुघातनाविला ॥ अग्रकोनहिलायाचहृदकर्मसमूहव ॥ मत्कन ॥ ग
थागतत्वनिर्यागा ॥ निसृज्यनमधुलः ॥ प्रतिविम्बस्त्वनमिष्या सर्ववर्जधनक
र्मण ॥ चूर्णकृतलोहिक ॥ गालकृत ॥ गकृतस्योपिहोउथवालिकृत्यामविथ
उतमः ॥ आयमनृषधनाय ॥ ५५ ॥ उतमः ॥ अचकसम्बनायः ॥ हृद्यवृक्षाद्युव
लुगहनविषा ॥ भिरिहानकामनृषधनाय ॥ गकृतस्योपिहोउथवालिकृत्यामविथ

सिद्धा. काकाभनम. मङ्गलमो नउवन्दारुवनि सललितं. सागनं तादवेयः ॥ हस्ताङ्गुलया
 नं नरुगुरुगवतं यमनृत्पुष्पनस्य ॥ अथिवायासासंसा नचकुविनेचयनिमि
 लसंति योगममहनाः साधियस्य प्रभमदाविसानिनिऊनुवंस्वामिनीनिष्पन्नं
 अथप्यात्मवद्यसमुच्चयति सुखं कल्पनाजालमुक्ताकूप्याहस्यप्रियमंभिनिमि
 विनये सङ्गुनु सर्वकालं ॥ ॐ नमः श्रीः यमनृत्पुष्पनो य ॥ ॐ नमः श्रीचक्रसं
 सम्वनायः ॥ ॐ नमः श्रीचक्रसम्वनायः ॥ ॐ ॥ धर्मधराकुजितहृदया. नन्दः

मथ
१

कालिका॥ काला॥ जगदाश कलाचने॥ जाउ॥ कमलासनरुध्रमक्षिवर्धना॥ क
ल कमला॥ काला॥ सहजानन्दकालि॥ जाउ॥ निर्विकलजितरुदया॥ ज्ञादेसुन्दरी
काला॥ नरुतमहेशकुमाना॥ स्वाकजाउ॥ जमनपूरक॥ देवजाय॥ धनग्रीव
विश्वसुनानुह॥ गार्गा॥ अश्वरुतवि॥ योगम॥ चर्यामि॥ रक्षक॥ नमरुद्धन
मामिहूनमाहूनमाहूनस्वाहा॥ किंचित्कल्पयनिगृहगृहनिवगुसायवद्धगृह
तन्नागसहसामिताचिनेनयोयागाप्रयागाय॥ ॐ॥ संसत्यथविषवद्धानया

५५३

सिद्धा.
८

चिरुविचित्रं नरा॥ विम्वं धाम दयालं तमेव न गुर्वन्दे मुदा सर्वदा॥ त्वाक नागगी
त॥ हलनिन॥ योग॥ मय॥ गङ्गा विषर्जन॥ पादपूजा॥ अर्घ्य॥ ओं श्रीः प्रवत्का
नायगुनूपस्त्रनायजं वज्राचार्याय सकर्मवजिनपादाय प्रणमि कृत्वा हा॥ ६४
पञ्चमय॥ धनदंता क्राय॥ मूलतुष्टि॥ ६४ क॥ नमस्कृतं॥ किंचिदस्मत्पादि
त्वा नाग॥ मूलतुष्टि॥ गीत॥ नागहर्त्रे वि॥ गलक्षानि॥ प्रमोहमद्युलभे नूतनमूडा
श्च न धनञ्जय उरुन उदकवितुवता॥ ६५॥ प्रबुल्लज्जुन्मिनत्लाय न गयने ररु
मथ.
८

लपविहासयिः जिनगुधमाया॥ क॥ ६४ क्षान्तिः॥ ठिया विषय सर्वयका २ समूडननंग
जिनचक्रचूनका॥ पवनश्रियरुदिया दृष्टिर्न चिया २ कलयीवजाननः दहदिह
दाह॥ ॥ सुगतहर्त्रे वायया नहायि न स्वध २ सूननवज्जुन ०० या अचिन्ता
लयवाधा॥ ॥ ६५ क॥ यावनसर्वस्त्वा संगहनसंगृहीता अन्नयावाजुना
युजा संखदजावा जयेया दुकावा नूणि ६५ वा अन्नमिनावा संगिनावा नैवसं
गिनावा नाम संगिनावा सर्वरुस्त्वा मयामहा मूडा मरुयेद प्रतिष्ठापयि

वा

संगिनावा २

सिद्धा.
६

नव्या ॥ १ ॥ गीत ॥ नाग गन्धहेनवि ॥ माल मय ॥ शिखरवन कालि मन्त्राणि अनूवाय
विनयवर्णि ॥ ५ ॥ नानेनवेकसत्त्व पनमध्वनधवर्णि ॥ ॥ नसि स हस्रकि न
धदधसूयसहस्रवर्णि ॥ ॥ वेङ्गविह ननूयनविठालि अनूनायनसत्त्ववर्णि
॥ ० ॥ ॥ ॥ क ॥ नत्वा सर्वगन्धगता गुणगनाधनायनादार्थगुणध्वजसनेना
महामिततत्त्वसत्तागदाभाग्रह ॥ अस्मृष्टवनवृद्धगोदमसमंसा नधननैतत्त्व
तनानावर्णनथागगादिनचनोदहं गथा कथनं ॥ त्वाक ॥ कादं ॥ माल ज्ञाय ॥

मथ.
६

मातृका पूजा ॥ गीत ॥ नाग गन्धहेनवि ॥ माल एक माल ॥ अकान संज्ञा म पृथिव न ००
उ ॥ तिलिय पादय अठिनांगहेनवा २ वृक्षा यनीपीता वा ॥ किना म च ॥ ॥ ॥
हीय ॥ धूर्तिगजलदा ॥ ५ ॥ अगधयनिकुमान महा काल कृपा ल यागि
नाग ॥ २ ॥ योग ॥ धतु मातृका शवना ॥ ॥ पूर्ववृक्षा यनीपीता अकान वीजं
प्रयागक्ष अस्मिनांगहेनवानाग कथनवृद्ध महायमनाग विराज्य ॥ आवाहन ॥
अं वृक्षा यनी वृक्षा लाक देवत न २ ॥ धिं कु नू हं रुद्र साहा ॥ पूजा मरु ॥ अं रुद्र

सिद्धा-
१०

बुद्धायेनमः ॥ सुगति हि धूय कर्षून चित्तं पंचग-धन ॥ वस्तु धीत च स्वा ॥ अद
न कृनि ॥ अजिध ॥ हले तसि ॥ काचिकं लाभिमाभि ॥ धन पूष्यमास ॥ अत्रुका
यनीय स्वाहा ॥ अकानवीजाय स्वाहा ॥ प्रयागं गङ्गाय स्वाहा ॥ अभितांगे गवाय
स्वाहा ॥ पद्मेनागना ह्ये स्वाहा ॥ अं ॥ अय स्वाहा ॥ चंद्राय स्वाहा ॥ यधर्मा
मूकाल मूख ॥ दक्ष ॥ ल ॥ मो ॥ सि ॥ वी ॥ मि ॥ यला ॥ ध ॥ मु ॥ मि ॥ च ॥ धु ॥ ग्रं ॥ र ॥ य ॥ र ॥ व ॥ न ॥ क
नं सु न यानि दग्धानि दृष्टि ॥ ना वज्र मजी न का धु द धु म न तं पीठ स्थिता वाष्प कि ॥ ७

मथ
१०

उसकरुना धना जल च न च ॥ अथ नामा महान् ॥ अक्षानो डम हर्षिका गजव न्या च्या
दिशि चाक्षि नः ॥ ॥ मय मास मस्य पचा वेध प्रजे नी गुरु रु ॥ स्वाद रु ॥ यी वं रु न
॥ ॥ कवर्ग जाक नदिनि रु धने दं ॥ पिय न पाद पं च ड रु न वी २ नू डाय नी रं ध ना
न रु क ना ग ॥ ग क ल ॥ म ॥ अ न ॥ ग र्जि म ज ल द ॥ ॥ ॥ अं ग द ग य मि ण दि ॥ या ग ॥ ॥ उ ॥
राव ता ॥ उरु न नू डाय नी णि ना क का न वी ज ॥ काला गि नि क रु च ड रु न व पु न्ना ग व
रु ॥ ॥ मय याल ना गा वि ला व्य ॥ आ वा ह न ॥ अं नू डाय नी सु न ला का दि व त ने २ ॥ अं

शिक्षा.

११

श्रीका. ११
हंरुद्रस्वाहा॥ धूप-गुग्गु-चत-प्रीतवधु-वसुस्वत-जीत्वा-तच्छाजा-दुर्गाति-इंद्र-मांस-
दाकेला-शीमाध-रुल-चाकूधाल॥ वावलमधि॥ दीपकर्पूना॥ पूष्यन्यास-श्रीमा
हृद्वनीयस्वाहा॥ ककानीविजायस्वाहा॥ कालागिनीकृतायस्वाहा॥ बडहेन-
वायस्वाहा॥ अरवपालनागनाजायस्वाहा॥ विष्णुवधायस्वाहा॥ ग्रहनायस्वाहा
पं-ला-घं-मुरु-गायत्रय-मुरु॥ अंरुंरुद्रमाहृद्वनीयस्वाहा॥ यधर्मा-अंका
लमूरव॥ दक्षिण-मानि-मांसि-नेका॥ भुक्ति॥ अक्रसा-निधि-संस्थि-आप्य-र-य-द

मथ.

११

पीतागअहिर्युक्तं नकृत्कृत् चारुनचनयुविंचकुंतथघूर्तिनः श्रीवाधिद्रुमद
म्हननमुखं श्रीगत्वसो संकननिन्यं वाधेयितासूगक्रने महालीमठभ्मानंम
हने॥ ॥ मंघमांसपादि॥ ॥ चवर्गगतः विहानवनरुध-जुष्वपादपन्नूक
रुनवा २०० डायनीकुंकुमा ककातकनाग्न दालाकला नदिगंजलदा॥ ॥
रावता॥ पश्चिम ०० डायणीकुंकु मवरुहा चकानवीज दालाकलकण वनुधन्नूक
रेनवंविताव्य॥ आबोहन॥ ओं ०० डायणी सुनलोकादवतन २ श्री ध्रुङ् रुद्र॥ धूपकुक

सिद्धा.
१२

म. चतनूयकेअन वमु कंकुमवर्धः स्वी कलस्वां ॥ थकायाउदैदन गुगुति गुघूला मां
स चूसाला किसियाथ रुलममासि अश्वकवृक्ष ॥ दीपगुचिकं किनिमधि ॥ पूय
त्यास ॥ ओं ॐ न्द्रायनीयस्वाहा ॥ चक्रानेविज्ञायस्वाहा ॥ क्षालाकलकृषायस्वाहा ॥ अनूक
रेनवायस्वाहा ॥ वनूहनागेनाज्ञायस्वाहा ॥ विनूपाक्रायस्वाहा ॥ क्षालाकलायस्वाहा ॥
येधम्मामंगुरा ॥ रूंरुट ॐ न्द्रा ॥ अतमस्वाहा ॥ दकिक्षात्रियू मासि मिसि ॥ ये लां ये मु
नि ॥ सुक्तोडिक्क गऊवोहेनोरयंकनेमव्याठनूयान्विता ॥ वदिम्भुवनूदस्रथा हरिणाय

मथ.
१२

मिथ्या माहिक कटक ॥ याना गर्जित कानिद समुदित कालं कूलं यश्चिमसा २०॥ कोडूम ॥ हिना
 सुविवनाने द्वा सो राधना ॥ ॥ मंथ मांस र्यादि ॥ ॥ टवर्गज्ञाने यवत समेन चूटक
 पादयं कपिलरुनेन वा २ वानाहिनका यश्च रुग्णा कलंक रुनेन वा वर्णक रुलेदा ॥ ॥
 रावना ॥ दक्षिण वानाहिटकाने वा रुक् कपिलरुनेन वा कलंक रुग्णे चूटक वृक् कूलिकना गां वि
 श्व ॥ आवाहन ॥ ओं वाहि नो गुवला का देवतेन २ श्री प्रह्लाद स्वोहा ॥ ॥ ध्येय न
 कि चंग नक चन्दन वस्तु काउ याका स्वा मूउजा गुगुति यं च प्रगाय सियाव

सिद्धा.
१३

ॐ. मांस. स्थला. नकाध. रुल. चयसि. दीप. गिसिचिकं. खलूमधि. चूकसिमा ॥ पू.
प्यन्यास ॥ ॐ. वा. ना. हि. स्वा. हा ॥ दे. का. न. वी. जा. य. स्वा. हा ॥ गु. व. ला. को. य. स्वा. हा ॥ क. पि. ल. रे. न. वा.
य. स्वा. हा ॥ क. लि. क. ना. ग. य. स्वा. हा ॥ य. मा. य. स्वा. हा ॥ क. लं. क. रे. न. वा. य. स्वा. हा ॥ ना. य. ज. य.
मं. गु. ॥ रुं. रुं. दे. वा. ना. ध. न. मः. स्वा. हा ॥ द. क्रि. ध. ॥ सि. ऊ. ॥ मो. सि. मु. र्वा. ॥ यं. लं. घं. कृ. ति. ॥
या. म्या. कृ. त्म. मो. पि. ध. त्य. कृ. धि. न. द. रा. डी. हि. पा. श. स. दा. ओ. नू. ठा. म. यि. चो. स. दा. ति. वे. ल. वा. न. शं. खो.
हि. जि. ह्वा. धि. यः ॥ क. र्ना. शी. य. म. व. र्ना. क. य. ति. दि. तं. चू. त. क. ले. को. म. हा. न. का. ल. कू. ला. द. व. र्नि. य. दः.

मध
१३

ना. न. कृ. क. ले. का. न. थ. ॥ ॥ म. य. मांस. म्या. दि. ॥ ग. व. र्ज. जा. नं. ए. क. वृ. का. र्त्त. ने. क. नं. ऊ. पा. द. य. को.
ठ. रुं. न. वा. २. को. मा. नि. न. का. म. हा. य. म. ना. ग. म. अ. द. ट. हा. सा. प्र. च. धु. ऊ. ल. दा. ॥ ॥ रा. व. ना. ॥ अ.
ए. न. को. मा. नी. न. का. न. का. न. वी. जं. अ. द. ट. हा. म. कृ. त्म. को. ठ. रुं. न. वं. क. लं. क. वृ. कं. म. हा. य. म. ना. गं. वि. रा. व.
आ. वा. ह. न. ॥ ॐ. को. मा. नी. का. ल. का. ला. का. द. व. ग. न. २. धी. ध्रु. रुं. रुं. स्वा. हा ॥ धू. य. अ. गु. न. च. न. मू. सि.
कृ. व. म. का. उं. जि. रुं. स्वां. का. उं. गा. गु. गु. मि. र. व. डा. मांस. क. चि. ला. पू. लां. का. ध. रु. ल. क.
व. सि. दि. य. प. का. चि. कं. ल. उं. म. धि. क. न. क. वृ. कं. ॥ पू. य. न्या. स. ॥ ॐ. को. मा. र्थ. स्वा. हा. ग.

सि. का.
१४

कारवीजाय स्वाहा॥ काललोकाय स्वाहा॥ काटभैरवाय स्वाहा॥ महपद्म
नामै स्वाहा॥ अग्ने स्वाहा॥ अद्दहसाय स्वाहा॥ ताय ऊपमनु ॐ रे हूट
कोमार्ग्यममः स्वाहा॥ दंडि धा. मानिक. मोसि. दालविनि॥ पंतांघ्रिस्तुति॥ अ
ग्ने श्रीदहिनेकमधुनुधनामकुक्रुमाला नितांका तावगथासृष्टभलधवलान.
गनामहानग्नक॥ घोवावा निधवन्नमागऊमूखाहासाहहा ८४॥ मधुन नन्दिता
तिकनंउसाविसनद अद्दहसाय स्वाहा॥ न॥ मधमा सत्यादि॥ पवर्गजेनेमाह

मथः
१४

ज

गृहदितिउ. प्रकातिपादपं. उन्नतसेनेवा श्वैष्टु विष्णुमा. अनन्तनागा. ल
म्नि वनहुतासन. पूनक्षउल्लया॥ कु॥ शावना॥ न॥ अत्यैष्टु वीष्णुमापका.
रवीउ. यानिउ. नु उन्नतसेनेवापि कनिष्टकु. अनन्तनागा विहाव्या॥ आवाहन
॥ उ॥ विष्टु वीविष्टु लोकादेवनन २॥ छिष्टु हूट स्वाहा॥ धृषासा. ह्रवाला. च
नकस्तुनि॥ वस्तु. वाड. मूखा. मासविष्णु. गुगुति. चनामधि. यंचामृत्त. मांसक
पला. कताथ. हल. अरु. दीयहा माचिक. प्रनिमधि॥ धृष्यत्यास॥ उ॥ विष्टु वी

सि. हा.
१५

स्वाहा॥ यकानुवीजाय स्वाहा॥ ऊयनि कृणाय स्वाहा॥ उन्मरुहे नवाय स्वाहा॥ अनेन
नागे स्वाहा॥ नेऽसुः स्वाहा॥ लकीवनरुतामनाय स्वाहा॥ यलाः यः ताये रुयमं
७॥ उं हं रुद्वेष्टु व्येनेमः स्वाहा॥ युः अः इक्षुः यं ना॥ मोसिः लवं॥ मृति॥ रुद्रा
मरु कनेनी धनेतीय स्वातां धवनेति साधुमिचितयूनः धविषध्वेनो नतापिः
नीला रुति॥ यकानुमथमवका रुनू २ कर्णवका महानु सर्वधने नृणा रुयकने
लकीवनगर्जने॥ वा ॥ मयमां सखादि॥ यवर्गजातभूत्येह वा न अर्जनपादयः

मथ.
१५

संहानरुहे नवा २ चामूरानकाः कलिकतागः धानाः धकानावरुनजलदा॥ ध्रु॥ रा
वना॥ वायुये चामूरानका यकानुवीजं देवीकाटकं संहानरुहे नवउद्रुवनवकं वा
भुकिनागं विराज्य॥ आवाहन॥ उं चामूरं शुलाकादवतने २ भू प्रहं रुद्र स्वाहा॥ धू
यः कृष्णः चतः अष्टस्रगन्धः वस्तुः नकाः आउचवस्वाः की नजाः सुगतिमिधुमाह
ती॥ मांसेः अकमालाचो कृष्णः रुलः वयसि॥ दीयंति मिचिकं मथमाधिः ईद्रुम्वन
दक॥ पूष्यः त्यास॥ उं चामूरं अय स्वाहा॥ यकानुवीजाय स्वाहा॥ देवकाटकणाय स्वा

सि.क्रा.
१६

हा॥संहा नरो नवाय ॥ वासुकि नाग राजा यस्वाहा ॥ वायु व्यस्वाहा ॥ धानाधका नायः
स्वाहा ॥ यं. लो. धं. ॥ गायत्रय मंत्र ॥ ओं हं ह्रं चामुमुय नमः स्वाहा ॥ य. अ. दकि धं
ल. लूलुगु ॥ मी सि उला ॥ मुनि ॥ वागावाति सूर्यात कर्प्यन वधन नः भुरं कु नगु म
नी वायु व्याकुलिको म हा नै गयति क्रु नाम हा कर्पुन ॥ म धा नित्य मवरु को धरु निना
घा ना मृग स्यात्स हान ॥ राग हीति के नाऊ उ म ग ना धा ना धका ने वसग ॥ ॐ ॥ मंघ
मां सृष्टादि ॥ अवे गजो नः अ न रथ ॐ ॥ न वे रु या दय. री य म र न वे २ म हा ल भी

मथ.
१३

१७५॥ अंखया ल नाग. किलिकिलिला वावर्ष धजलदा ॥ ध्रु ॥ रावना ॥ उभा न म हाल
भी स्वे ना सु का न वी ज. च नि गुरु गुं री व ध र न व. वरु क वरु. न क क ना ग वि रा व्य ॥ आ
वा रु न ॥ ओ म हाल भी सु न ला का दे व न व २ भी पुं हं ह्रं चामुमुय स्वाहा ॥ धूय. न स्या च न. इ व
दान. वरु. अत. जी ल स्वा ॥ आ दे न. चा कू जा. नु गु नि. स्या वी ऊ. मां स. दा क ला. स
पचा च. रति ध. रु ल. व्या. दी य ध ल. च ना मा धि ॥ पू ष्य त्या सु. उ म हाल भी.
स्वाहा ॥ सु का न वी जा य स्वाहा ॥ च नि गुरु गुं रा य स्वाहा ॥ री व ध र न वा य स्वाहा ॥

सि.स
१८

नवांतिक ॥ किं कनामिकागकाभिप्रीयमाहं चंद्रहिमः ॥ २ ॥ मूलका ॥ वृद्धव
नमकाठदभयनंद ॥ अद्यानासर्वमानाक्षकृपप्रियत्वयाकनू ॥ ॥
मूलकादं ॥ वृद्धववदवज्ञाय नृत्य ॥ गति ॥ प्रियप्रियनाथ ॥ दिगसयदकाय
पूर्व ॥ नाग ॥ कामाद ॥ गाल ॥ वक्रकावे ॥ प्रियप्रियनाथ ॥ क्रियायिलसचियमि
२ गेहस्वमुवने ॥ हनहिमिह ॥ १ ॥ आत्मानवजाकुक्षकारनूयभीनवर्ग
विचिंम्य ॥ ॐ आलिरयेदचका मरुकारविष्णुय २ सर्वइष्टदवाधियानिमा ॥

मा क

मथ
१८

नानुहं ॥ २ ॥ मूलका ॥ मृत्तुसर्वविष्णायाकायवाकविरुसंदिनामृहंवज्रधना
प्रिमानहोनेचक्रप्रथाजक ॥ चक्रनादिफवपूषानेस्त्रानयामिप्रिकायज्ञानल
ययद्योदमकचिविभीर्यदुनान्यथा ॥ १ ॥ धनपौत्रकास्यदिवन्धन ॥ ॐ सुम
निस्रुक्तु ॥ ॥ मृ ॥ मधचिकमनाजा लघयअधूना २ हननाहिवाल पांभूमिव
कनक्ष ॥ योग ॥ अचिकाय ॥ ॐ एकभुचिकवज्रयदमहाकाररुज २ सर्वइष्टा
नस्त्रानुक्तु ॥ ६ ॥ ऊं मृगुवधननामिह नुरुक्तु २ ऊं ऊं कारुआयउ

सिद्धा.
२०

विद्मः॥ॐ॥ आनय हागवनी विद्याना ऊकुं रुट् ॥ १॥ नूडगरुधवननचविद्यकनम
कि २ नाथमा हागवनी युनेति वनि युयं ॥ योगी ॥ अचि ॥ अ विवधुचिक वज्रयद
महा कारुणं २ सर्व इष्टान सुनानु कुं रुट् ॥ म ॥ अरुध वननाथ व मा व्याम
चिन्मा २ स्वर्गा र्ध विवधुनि ले समीविकने ॥ योगी ॥ यद ॥ अं स मयद वज्र महा
कारु विष्टु र्ध य २ स्वचवादि मा नानु कुं रुट् ॥ अचि ॥ अं उ म नी जाले वज्रयद महा
कारुणं २ सर्व इष्टान सुनानु कुं रुट् ॥ म ॥ वृद्धवनना म अरु कारु नाजा २ दभ ॥

मथ.
२०

दिगसिन्तां माना नानक नदां ॥ योगी ॥ यद ॥ कर्मयद वज्र महा कारु विष्टु र्ध य
२ दभ दिगसिन्तां सकल इष्टानानु कुं रुट् ॥ अचि ॥ कय ॥ अं आः वृद्धवनने
जयद महा कारु अरु कय य २ सर्व मानानु कुं रुट् ॥ म ॥ वा कलिचन र्ध उज्जगन
धनीया ॥ गवनि कलि र्ध अगीत वनिता ॥ योगी ॥ यद ॥ अं ए कयद वज्रयद म
हा कारु विष्टु र्ध य २ सर्व इष्टानु कुं रुट् ॥ गीत ॥ र्ध क ॥ अरु ना म्य हं लया हा फं
दर्भ य नंद र्ध ॥ दिभ ॥ दभ कारु देभ दिभो कीलय सद्य नाथ ॥ १ ॥ धन वृद्धवननः

सिद्धा.
२९

शानकादं॥ अर्थ॥ पूजा दधयउ॥ पुनवृद्धवननृत्त॥ गीत॥ नाग॥ तमावनी॥ मा
थ॥ ~~कुं~~कानसंज्ञाग॥ १८॥ क॥ देवज्ञाय॥ वृद्धवतलिहावने॥ ॥ धनमालसाय
मूलाचार्य अर्थननसुउहाउताकिनधरुजास्यमधुलप्रदक्रिध॥ वाक्के~~धि~~
विकार्य॥ ॐ अर्थसननरुगवनाय कचिन्कटपूटना अरु कनूधमवनथिमा
नआरुचक्रप्रपूजय॥ विजैरुधदिकवयूमानिस्त्रानेयामिगिकायेकानलधय
यदिमकभिदिभीर्यदृगन्नात्यथ॥ धनमाककोस्यपिहाउयाउ॥ नृत्त॥ गीत

मध.
२९

नागरुनेवि॥ मालमय॥ ॐ रववधुकवजकुंकावकालिनाशिनिपूचाययियाने २
स्त्रुलपिअननमहाकाधने अर्थयविष्णुसमुहने॥ ५॥ घयघाटय २स
वदृष्टाने कीलयकुंरुटयायहने २॥ अवजकीलय वजधने आरु कायवा
कचिरुकीलयनी॥ ॥ विजसत्वानाधियाने अनुरुनसिधियदमाकरु
लद॥ ॥ पूर्वादिदानकाकाननने रिमाजनयति धाननूया २चरुधुय
रिषमहाधमधमने देवाधियतिगद्यकीलयनि॥ धूवासाकिनघातार्य॥

सि.क्रा
२२

पाग॥मय॥रावना॥पू॥पूर्वः॥आदिसगद्यनिवानानामाकर्षय॥कीनघ
माकाटय॥ॐआःघघाटय२॥ॐ॥आदिसगद्यनिवानाक्षकीलय२॥ॐ॥रु
द॥ॐ॥आयस्वाहा॥यं॥लां॥घं॥श्रुति॥पूर्वस्तनमथनंरिनांजनयुतिपूरं
घोननूथेप्रचक्षुःकाकदुष्टुनमाम्यहं॥१॥तर्प्यहं॥सूक्तानि॥॥श्रीवि
जसत्त्वो॥उरुनादिगदानं॥उलूकानननस्यामवर्धतनू॥हमिनयना२॥नो
गकनमहा॥ममन॥यकाधियोगिगद्यकीलयनि॥३॥उरुनयक्रासगद्य

मथ
२२

पनिवानाक्षकर्मय॥ॐआघघघाटय२यक्रादिसगद्यनिवानाक्षकील
य२॥ॐ॥रुद॥ॐ॥आयस्वाहा॥यं॥लां॥घं॥श्रुति॥उरुनयक्रामानूटंमामव
र्धप्रणकनंमहाक्रुहीमनूपांचउलूकाक्षप्रधमाम्यहं॥॥श्रीविजसत्त्व॥
पश्चिमदिगदानं॥मनानननं॥सिद्धेनानूनननूविकटनूपा२॥आलाकुलमहा
॥ममन॥रुनाधियोगिगद्यकीलयनि॥३॥पश्चिमवन्महदिसगद्यनिवाना
नामाकर्षय॥ॐआघघघाटय२वन्महदिसगद्यनिवानाक्षकीलय२॥

सिक्का.
२३

रुद्र॥ॐ ववूराय स्वाहा॥ पं. ला. घं. मु. ॥ यन्मि मनकवर्हं मागधियतिमर्द
नेधो नाह हावदनं धना धानमाम्य ह॥ श्रीवज्रसत्त्व॥ दक्रिहादिगङ्गा नं. ४५
कनाननननकनकनिरुददं हा. घ घननादि २ कलंकलं नवमहाभमभन. प्रता
धियतिगुहा कालयनी॥ ५५॥ दक्रिहा प्रताधियन्मादिसगहायनिवानातामाक
वैयन॥ ॐ आ घ घ घाटय २ प्रताधियति यमादिसगहायनिवानातामा कालय
२ रुद्र॥ ॐ यमाय स्वाहा॥ पं. ला. घं. मु. ॥ दक्रिहा हंमवर्हं गी कृता नदय्यहा

मथ.
२३

निशं॥ धानघघदनादचनमामिभुकवाननं॥ ॥ श्रीवज्रसत्त्व॥ ॥ दक्रिहावन
कोरहादेवीयमगादि कृष्ण पिनाहा. प्रचक्षु नूपा॥ २ अट्टहासमहाभमभनन
जाधियतिगुहा कालयनी॥ ५५॥ अग्नवर्धननादिसगहायनिवानातामा
कालय २ रुद्र॥ ॐ अग्नय स्वाहा॥ पं. ला. घं. मु. ॥ अग्नोमान प्रहादेवी कृष्
पीतावहाधनी॥ देहमाधियमर्दचयमगादिनमाम्य ह॥ ॥ श्रीवज्रसत्त्व॥ ॥
द्वितीयवनकोरहा यमइती न. पीता नूहातनू. कोरनूपा २ लकीवनइतासग. म

निका.
२५

लुप २५ ॥ ॐ ॐ ॐ नमो स्वाहा ॥ पं. ला. घं. मु. ॥ ॐ ॐ नमो स्वाहा ॥ गीत नमो
यहा विधी. माला विधिं सती देवी नमो मय मने थनी ॥ श्री वज्र सत्व ॥ ॥ ३
स्त्री प्रचक्र वर्ति उर्ध्व सखि ॥ माला विधिं हनयीत दं हा २ वृत्ता न विधिं गद्य. स
यने. खचन मान गद्य कीलयनी ॥ ५ ॥ ३ उर्ध्व वृत्तादि सगद्यो निवा नातां अक
षयत ॥ ॐ आः घघ. घाटय २ वृत्तं डाकं वाकसादि सगद्यो निवा नातां अक
२५ २५ ॥ ॐ उर्ध्व वृत्तं स्वाहा ॥ पं. ला. घं. मु. ॥ वृत्तं डाकं दया दृष्टान् गहा वि

मथ
२५

सादि खचन ॥ माला विधिं सती देवी उर्ध्व प्रचक्र वर्ति नमो मय ॥ ॥ श्री वज्र सत्व
॥ ॥ मूल नाडे कुार अति नील मूर्ति. या माला वासिन मान हनरा २ एथी अस्त
न गद्य अक नागसादि कं. खचनी मान गद्य कीलयनी ॥ ५ ॥ अर्ध न सचि सया
दि सगद्यो निवा नातां अकषयत ॥ ॐ आः घघ. घाटय २ अर्ध एथी अस्त न नागधिय
यादि सगद्यो निवा नातां कीलय २ ५ २ ५ ॥ ॐ एथि वीर्य स्वाहा. नाग मय स्वाहा ॥ अ
स्त न सः स्वाहा ॥ पं. ला. घं. मु. ॥ एथी नागे स्तन कृष्ट खचन माला दय्ये दं यथ

सिद्धा. २७ यं गीतं नागकामा उ॥ ताल॥ बटकं कान॥ प्रकलितं हुं काना रुवसू नृतिः ॥ ठनीला
उत्तमकूतिदहा २ विष्णु कलितः ॥ श्रीकनधो नत्तमकूटको धामिप्यो ॥ ३ ॥
नमो मिथी च वृवीनः रुवसिधूनकनधो २ विष्णुनाथ प्रिदुवन द्यापितः वेदा
निधिसु ॥ ४ ॥ नकनधो ॥ ॥ अन्नकज्ञानुल्लितः प्रिदुवन वीनः सुव्यं रुद्र
खदधनं वासुतकूनी हृदि पाधनः रुवो निगहन वन्धनकनधो ॥ ॥
नातानलहान नोपूनकलिं मखलारुपितदहा २ दृष्टा कनाल रीषमवद

दत्तं शिखुवनवाया प्रचक्षुर्वीनं॥ ॥ वीनाधियमिसर्वरुयहनधं. प्रकपिअचा
दिअन्तनमनसा २ सुवननयका. वन्दितयादं. सर्वसिद्धिभाकरलदं॥ ॥
योग॥ ६५॥ क॥ अर्वातिनिहितजानूसव्यहस्तचरेवङ्गताउगनकनेमूष्ठीकुर्त
नीअक्रियाअ॥ निविदिद्यनभनीनंचेमुनूकेचछुचक्रसमयगुरुगवनविप्र
हन्ताचलाय॥ ॥ स्फादं॥ धूनकावणूजाअर्घ. दक्षयगु॥ पून. तृत्य. गति॥
वाग. हरेओल॥ माल. माथ॥ रुकानसेजागळू. लनीलसमेइतिदेहा २ पा.

सिक्का.
२८

कालकालनसमयमि कालाकालानसमाकाला ॥ ३८ ॥ अयं तु अचल अतगमूनी
खज्जयाधकनधनी २ अगतनाथ अगतयोसित महाकारनाया ॥ ॥ अवनितिहि
नवा मज्जानूधानवदनतिलाचना २ ककनाकसखरयकन अखिलविष्णुह
ना ॥ ॥ वक्राहनिहनमघवनाभनदय्यदहनधुवीना २ उष्टातिपीठितधनस
यकिनधविषहना ॥ ॥ विविधिवलाहनधरविषदिब्यनलसुमानी २ अगतवा
दिनसर्वसम्पत्तिस्तद्विवनरुलदायक ॥ ॐ ॥ योग ॥ ॥ ॥ ॥ विष्णुम्वोऊ

मथ
२८

दिनममधुलगताहुं कानवीगाहुवं उष्टारि यनियीठिताधनमहं घावाहहा
सानन ॥ ३८ ॥ मासविनाजितदक्षिणकनयाधसुसयननवन्देष्टीवनचलुम
हनावधमहकारमुदाहसदा ॥ ॥ धनचलुवीननअभिवाद ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दोनयनसुखसुपरिसम्पन्नाग्नाग्नासुखचंगसा ॥ काममाक्रमं प्राफसि
हिसवदुयूनयून ॥ ॥ देवज्ञाय ॥ माकनलितकोथ ॥ कादं ॥ मूलनृप ॥
गीत नाग मधुमन ॥ गालहुं मान ॥ प्रमादिगादिदधमिसुखविमनेम

सिद्धा. लयि. महासुखनाया. चतुस्तय्यश्रयमनिथा ॥ ५२ ॥ नयायनीधनपूर्व, निधन. ॥
 ३१. उवनचक्रधनूयी २ सर्वविकल्पविधसुनीद्वी. अनुरुन हानवनदोयनी ॥.
 अमिगलमधुल उदयोधिति. कल्यातनमिचनूयधनी २ कनेतिकयाल. खचा
 गधनी. प्रहानवनदहा ॥ ॥ दिगम्बनमकुटकध. चकीकुधुलकाधधनी
 २ वृचकमखनयायलधनी. ग्रिव्यनूदननधिलमाला ॥ ॥ सर्वतथागनड
 ननीद्वीविनाहितरावअसावे २ विविजयागिनीचनेहाधिलगतधनी. गव

सथ.
३९

निःसमनसं वज्रा ॥ ५६ ॥ योंग ॥ २४ ॥ क ॥ नत्वां श्रीवज्रवानाहि मक्रमूर्तिजिनध्वनी ॥
अत्यन्तावनदासीमां मेघिसिद्धिवनप्रदा ॥ जेवकालसमाभीलं सहजातन्दनीयती
॥ प्रह्लादानंदहायनमस्तु श्रीवज्रयागिनी ॥ ॥ छंद ॥ सद्य पूजा ॥ गीत ॥ इ
विजसम्भव ॥ अर्थ दक्षपुत्र ॥ पुनर्नृत्य ॥ गीत ॥ नाग भृंगभनेमान्धी ॥ मालमार्थ
॥ द्विजुक्त एकमुखबहुकुवर्धुजिनगा २ मेरूटकभादिगम्बना ॥ धृ ॥ गीतानाहं हंत
नाहं हंत नाहं तं हं हं ॥ ॥ वामकनोटकदहिनकदहिनकनति २ हाउरेन

सिका.
३२

सूर्यमण्डलमाज्यमांवेदे मूर्ति २ वज्रमणिनिविह्विता ॥ ॥
सतगुणचनरसमिलगतधवा २ वज्रवानाहि नुश्याय अनदम ॥ ६०० ॥ वागम ॥
रक्षा ॥ निर्माना निदिनमममलुगगाकायादेव हर्षवत्प्रकाशां देला हलनम
मधवा सुभाकरसुजायमा ॥ विद्यावृद्धकदम्बकदहमिया चक्रुथो रुदनी
सानंदालिलनाममसूनगावानाहिका चेतसि ॥ २ ॥ लिनकायदडाकात्यमा
कतं ॥ धनपंचधनाहायेक ॥ यागिनीपितमूजाति यमूलं वागममाल ॥ एकमू

मथ.
३२

खकावागकर्षकामखलातय गीत ॥ कीला ॥ धनवेधननदुय ॥ गीत ॥ सर्वव
द्र ॥ हाजरनद ॥ रक्षाक ॥ चक्षुलिकनलीलयोतिरुयदाइलालिनाविध्वरुविध्व
रनीमहासुखविनचयलीलस्वरादादयो ॥ मूलाजायनायतिवृति यदप्राफा
विध्वरुजयोनागद्रागवृते हयचसहजानरायवदामह ॥ दक्षपुत्र ॥ पानेक
मनसालिग्रहनकोमानी पूजा ॥ पंचसुकाजानक ॥ मिष्टाधिवासन ॥ मगुल
धिलखाननने ॥ पूरुषाय ॥ सगनय ॥ दक्षपूजा ॥ कोमानीकाय ॥ दगुसम

सिद्धा.
३३

य॥ कृमानियासिद्धिनिय॥ बाहिलहियक॥ समयाचक्र॥ २४॥ भास्ति॥ कल॥ कि
नक्षत्रोक्तिकाविसर्जनध्वय॥ धनसहानमधुलपातालकाय॥ वलिच्छाय॥ ध
नलिश्रुयननदुहाडननृपकास्य॥ गति॥ ध्विनी॥ नागज्वडधि॥ तालमाध॥
ध्विनिसेनावनविनासयिकेयिसे॥ ३॥ उथरनाडांमधुलनाया॥ ध्रु॥ हज्जकान
हमलजगतनिवासियान॥ ॥ अमिय॥ शनिनंजनद॥ २४॥ २॥ सहजसुन्दरीनाया
जिनहनययिर॥ ॥ ॥ उचउयागिती॥ यलमलमला॥ २॥ वज्रवोनाहअलिंगध

मथ.
३३

काल ॥ ॥ उपरमांशकनूद्यकवावि २ ऊयं ऊयं अलिङ्गनीलवर्णवानि ॥ ६६७ ॥ पा
गा ॥ ॥ २००० क ॥ संपूर्णं सर्वजगतमनानथयदं सर्वतनवादिना यीत्वा सर्वविकल्पमोहनका
नशांशकिनीहनुकादिना ॥ यश्चक्रं यनिवर्णमङ्गितगुणस्तद्वयमाकुर्यदं ॥ यस्यातस्य क
पादुनस्यमनसानुष्यप्रसभयदिना ॥ ॥ धनदूजाकागाय ॥ भगवत्कनखदांगथिस्य धनक
मूलाविभज्जन ॥ गीतगे ॥ सोदभहय ॥ यलायं मुन ॥ सनाकन ॥ क्रमायन्त्र ॥ खज्जवगोहयंत
गुनसग्वनविथ ॥ दभयन ॥ धनयंचनासदउहय ॥ गद्यचक्र ॥ गीतराखन ॥ माकसिदि

सिका.
३४

धनयस्यसिकामथयविधि॥ ॥धनकाहननवृययिहाउय॥धनलि सतिषूनूपनिमा
नथपूजाविधिधनय॥अदि.अन.वाहिलदंतनसायगीत॥यनिकननेपूजाधूनकाव
सिकापूजायायनिमानथधनमकृणरिषक॥मधुलयासिकानिय॥धनयागि
नीमालकास्तविधि॥सगभन.माहनीधूनकोडा॥वाहिलहिय॥कंधाकडकल्यागुल्येनि
काय॥धन२॥धनयधनरिगहह॥गीत॥मालकायविकमनकाय॥समयावकड
उमानसगवनविधि॥गहचक॥राखन॥मुखमुद्रि॥स्नानकाकाय॥रामवलिवि

मथ.
३४

या॥दधयग॥अभिर्वाद॥दीयदान॥ ॥होमिसिकामथपूजाविधिरुलसमाफः
॥०००॥ ॥अंनमःश्रीवक्रसम्बनाय॥धनवेधननविधि॥वेधननलखस्यहय॥
उयाध्याशंआहयलवास्वडाकिफुपनस्यवेधनननय॥धनस्नानरुफालगस्यरान
ना॥अंस्वरावकुआसर्वधन्नास्वरावकुआहंभुत्यताहानवजस्वरावयनमहानमयनिस्व
रावयनमनस्वराव॥अनूकस्ययायमलनकुवभिनसिलीनयधन॥भुत्यताकनू
धनरिन्नवाधिविक्लासकवनं॥स्वनूपहानेनस्ममयभिनसिचविशेय॥अकव

सि.क्रा.
३५

क्षयायादि धूप निलंजन लाहानि नका ॥ स्नान ॥ भस्वादक पंचगव्य पंचगन्ध मकुलान
पक्व नल मरु सतय ॥ हृष्टि धसा चितय अरुनत उयक ॥ अरुनत यतल वकुलादि
॥ धूमि अरुनत हियक ॥ धनका उरु इरुतल अन्धय रत विथ ॥ उच कूवन्धन रेवनेमा
न ह ॥ पंच सलिनक ॥ गूद नूतानिक वानी समया तिक माव हनु समन नक ससि
क्षिपिव वजा मृतादक थथ ॥ सिध अरु उभल स्नान माला कुमानी सुक कुरु २५ हिने
कयालस ॥ स्वाज पंचाक्ष कुमल सूरक ॥ कस्तूरी सुनग प्रिय रत नापिव कव्यं सुक रग ॥

मथ.
३५

हं महा सुखति ॥ धनय मरुंजन भिन सतय ॥ अरि धकं महा वरु उधु कन मरुतं यथ
हिग्नि धनय सतव ॥ मानक यो २ ॥ धन पूजा याय ॥ चेत अरु मका स्नान नव योदि ॥ व
रु विथ ॥ अनादिना धन सत्व वरु सत्व महानन ॥ समन रुद्र सवाला वरु गरु प्रमिप
ति ॥ गूति वरु हियक ॥ धन यधु विथ ॥ गृहीता हिम या रग व मयि सन्निहिता रुवः
गूतिय धरि धकः ॥ चकं वेव र्थ सुकलंद स्वाना धन दस्व मे ॥ चक द व या न त्वं आवा
य्ये पनिक मनेच ॥ सम यं वृद्ध नाथ ना सत्व नं गुध मूरु मं ॥ आवाय्य स्वाम्य हं नाथ सर्व

न३

सि. का.
३८

यह दीक्षा किन काम मध्य मनु किनी जल नूयं विराव्य ॥ ॥ गुरु सत्त्व १०४० ॥ सु सु सु ३८
सि. का. मथ या स सु सि द्र य का श ल ॥ ॥ लि धि तं व क्त च क्त म हो वि ह न या श्री व ज दे वी
वन हार वित वि प्र वं ५ श्री व ज वा र्प जी व न ल र ल वि त ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ ॥

आर्य समाज
1.248
ASMA ARCHIVES

मथ.
३८